सत्यमेव जयते

भारतीय भाषाएं और राजभाषा हिंदी

अनुवाद के आयाम

भारत सरकार, गृह मंत्रालय, राजभाषा विभाग

भारतीय भाषाएँ और राजभाषा हिंदी

अनुवाद के आयाम

संकल्पना
अंशुली आर्या
सचिव

मार्गदर्शन
मीनाक्षी जौली
संयुक्त सचिव

सम्पादक
रघुवीर शर्मा
उप–निदेशक
भावना सक्सैना
सहायक निदेशक

परामर्श
विमलेश कान्ति वर्मा
लब्धप्रतिष्ठ भाषा वैज्ञानिक

राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार

भारतीय भाषाएं और राजभाषा हिंदी : अनुवाद के आयाम
India languages and Official Language Hindi : Aspects of Translation

संकल्पना : अंशुली आर्या
Concept : Anshuli Arya

मार्गदर्शन : मीनाक्षी जौली
Guidance : Meenakshi Jolly

परामर्श : विमलेश कान्ति वर्मा
Consultation : Vimlesh Kanti Verma

सम्पादन : रघुवीर शर्मा, भावना सक्सैना
Edited by : Raghubir Sharma, Bhawna Saxena

प्रथम संस्करण : 2025

© सचिव, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार

इस पुस्तक में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार एवं दृष्टिकोण संबंधित लेखक के हैं। सरकार अथवा राजभाषा विभाग का उससे सहमत होना आवश्यक नहीं है।

प्रकाशन : सचिव, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार

अमित शाह

गृह मंत्री एवं सहकारिता मंत्री
भारत सरकार

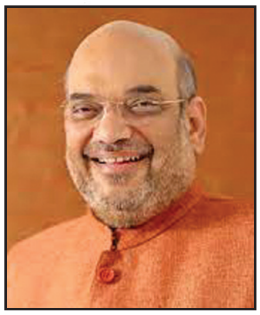

संदेश

मुझे यह जानकर अत्यंत प्रसन्नता हो रही है कि हिंदी दिवस और पंचम अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन के अवसर पर "भारतीय भाषाएँ और राजभाषा हिंदी- अनुवाद के आयाम" शीर्षक से एक संकलन-ग्रंथ प्रकाशित किया जा रहा है।

भारत की भाषाई विविधता हमारी सांस्कृतिक शक्ति है। इक्कीसवीं सदी के इस युग में, जब वैश्विक स्तर पर संवाद की गति अभूतपूर्व रूप से बढ़ रही है, तब भारतीय भाषाओं के बीच सेतु के रूप में हिंदी की भूमिका और भी महत्वपूर्ण हो जाती है। अनुवाद केवल शब्दों का रूपांतरण नहीं है, यह भावों, संवेदनाओं और संस्कृति की आत्मा को एक भाषा से दूसरी भाषा तक पहुँचाने की साधना है।

भारतीय भाषाएँ सहअस्तित्व और सामंजस्य का अद्भुत उदाहरण प्रस्तुत करती हैं। एक- दूसरे से शब्द, भाव और शैली ग्रहण कर उन्होंने जो समृद्ध परंपरा विकसित की है, वही हमारी भाषायी समरसता का आधार है। इस समरसता में हिंदी एक केंद्रीय धारा के रूप में विभिन्न भाषाओं को जोड़ती है और राष्ट्रीय एकता को सुदृढ़ बनाती है।

राजभाषा विभाग ने भाषाई समन्वय की दिशा में कई सार्थक पहल की हैं। भारतीय भाषा अनुभाग विभिन्न भाषाओं के बीच संवाद का मंच बन रहा है और हिंदी शब्द सिंधु छह लाख से अधिक शब्दों का संग्रह बनाकर भाषाओं के आपसी आदान-प्रदान को नई ऊँचाई प्रदान कर रहा है। ये प्रयास न केवल राजभाषा हिंदी को सशक्त बनाते हैं, बल्कि भारतीय भाषाओं की समरसता और सहयोग की भावना को भी आगे बढ़ाते हैं।

यह ग्रंथ उन अनुवादकों की रचनात्मक यात्रा, उनके संघर्ष और उनके अनुभवों का जीवंत दस्तावेज़ होगा, जिन्होंने भारतीय भाषाओं और हिंदी के बीच साहित्यिक अनुवाद को समृद्ध बनाया है। मेरा विश्वास है कि यह संकलन आने वाली पीढ़ी के लिए मार्गदर्शक सिद्ध होगा और भारत की भाषाई एकता, सहकारिता तथा परस्पर समरसता को और गहन करेगा।

मैं इस ग्रंथ के संपादन एवं प्रकाशन से जुड़े सभी विद्वानों, लेखकों और अनुवादकों को हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूँ।

(अमित शाह)

कार्यालय : गृह मंत्रालय, नॉर्थ ब्लाक, नई दिल्ली-110001
दूरभाष : 23092462, 23094686, फैक्स : 23094221
ई-मेल : hm@nic.in

नित्यानन्द राय
NITYANAND RAI

सत्यमेव जयते

गृह राज्य मंत्री
भारत सरकार
नार्थ ब्लाक, नई दिल्ली – 110001
MINISTER OF STATE FOR
HOME AFFAIRS
GOVERNMENT OF INDIA
NORTH BLOCK, NEW DELHI - 110001

संदेश

मेरे लिए यह हर्ष का विषय है कि हिंदी दिवस और पाँचवें अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन के अवसर पर राजभाषा विभाग द्वारा "भारतीय भाषाएँ और राजभाषा हिंदी – अनुवाद के आयाम" शीर्षक से एक महत्त्वपूर्ण संकलन का प्रकाशन किया जा रहा है।

भारत की पहचान उसकी भाषाई विविधता से है। हिंदी ने निरंतर इस विविधता को जोड़ने और संवारने का कार्य किया है। यह संकलन उसी परंपरा की एक सशक्त मिसाल है। माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी का विचार है कि हमारे देश में हिंदी भाषा का आंदोलन उन लोगों ने चलाया जिनकी मातृभाषा हिंदी नहीं थी। सुभाषचन्द्र बोस, लोकमान्य तिलक, महात्मा गांधी, काका साहेब कालेलकर, राजगोपालाचारी जिनकी मातृभाषा हिंदी नहीं थी, उन्होंने हिंदी भाषा के लिए, उसके संरक्षण एवं संवर्धन के लिए जो दीर्घदृष्टि से काम किया वो हमें प्रेरणा देता है।

जब एक भाषा से दूसरी भाषा में अनुवाद किया जाता है, तो दो संस्कृतियों, दो परंपराओं और दो हृदयों के बीच सेतु बनता है। यही सेतु भारत को एक साझा परिवार के रूप में जोड़ता है। साझा परिवार की इसी भावना को रेखांकित करते हुए माननीय गृह मंत्री श्री अमित शाह जी भी कहते हैं कि हिंदी के समृद्ध होने से इस देश की सारी भाषाएं समृद्ध होंगी और इस देश की सारी भाषाओं के समृद्ध होने से हिंदी ही समृद्ध होगी।

राजभाषा विभाग ने हाल के वर्षों में जिन रचनात्मक प्रयासों की शुरुआत की है, वे हमारे भाषायी भविष्य की नई संभावनाएँ खोलते हैं। भारतीय भाषा अनुभाग संवाद को जीवंत बनाता है। इसी प्रकार हिंदी शब्द सिंधु भाषायी एकता और समन्वय की दिशा में किया जा रहा उल्लेखनीय कार्य है। ये प्रयास आने वाले समय में हमारी भाषाई विरासत को और समृद्ध करेंगे।

मैं विश्वास करता हूँ कि यह संकलन पाठकों को प्रेरित करेगा तथा भाषाओं के बीच आत्मीयता एवं समरसता को और सशक्त बनाएगा।

इस ग्रंथ के प्रकाशन से जुड़े सभी विद्वानों और रचनाकारों को मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।

(नित्यानन्द राय)

नई दिल्ली।
2 सितम्बर, 2025

Office Tel. : 011-23092870, 23092595, Fax No. : 011-23094896

बंडी संजय कुमार
BANDI SANJAY KUMAR

गृह राज्य मंत्री
भारत सरकार
MINISTER OF STATE FOR
HOME AFFAIRS
GOVERNMENT OF INDIA

संदेश

हिंदी दिवस और पाँचवे अखिल भारतीय राजभाषा सम्मेलन के अवसर पर "भारतीय भाषाएँ और राजभाषा हिंदी अनुवाद के आयाम" शीर्षक से संकलन-ग्रंथ का प्रकाशन होना अत्यंत महत्त्वपूर्ण और स्वागत योग्य है।

आज जब हम अमृतकाल की ओर बढ़ रहे हैं, तब भारत की भाषाई विविधता हमारी सांस्कृतिक समृद्धि ही नहीं, बल्कि आत्मनिर्भर भारत की आधारशिला भी है। एक ओर जहाँ भारतीय भाषाएँ अपनी विशिष्ट पहचान बनाए हुए हैं, वहीं हिंदी ने एक साझा सेतु का कार्य कर इन सबको जोड़ने का दायित्व निभाया है। यह संकलन उसी भावना का साक्ष्य है, जिसमें भाषाओं का परस्पर सहयोग और साझेदारी, राष्ट्रीय एकता के लिए प्रेरक शक्ति बनती है।

अनुवाद के माध्यम से विचार, विज्ञान, साहित्य और संस्कृति की अनमोल निधि एक भाषा से दूसरी भाषा तक पहुँचती है। यह प्रक्रिया केवल ज्ञान का आदान-प्रदान नहीं, बल्कि ज्ञान की वृद्धि भी है। जब विभिन्न भाषाओं के अनुभव हिंदी से जुड़ते हैं, तो वह एक व्यापक भारतीय दृष्टिकोण का निर्माण करते हैं, जो हमें वैश्विक स्तर पर भी सशक्त बनाता है।

माननीय गृहमंत्री जी के मार्गदर्शन में राजभाषा विभाग द्वारा भारतीय भाषाओं की समरसता के संवर्धन की दिशा में स्थापित भारतीय भाषा अनुभाग तथा बृहत ऑनलाइन शब्दकोश हिंदी शब्द सिंधु भाषाई एकात्मता के लिए दूरगामी महत्व रखते हैं। ये प्रयास न केवल भाषाओं को डिजिटल युग में सशक्त कर रहे हैं, बल्कि भविष्य में भारत को ज्ञान और संस्कृति की वैश्विक राजधानी बनाने की दिशा में भी अग्रसर हैं।

मेरा विश्वास है कि यह संकलन आने वाले समय में अनुवादकों, शोधकर्ताओं और विद्यार्थियों के लिए मार्गदर्शक सिद्ध होगा तथा भारत की भाषाई विरासत को नए आयाम प्रदान करेगा।

इस महत्त्वपूर्ण प्रकाशन से जुड़े सभी रचनाकारों और विद्वानों को मैं हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूँ।

(बंडी संजय कुमार)

Office : Room No. 127, North Block, New Delhi-110 001 Tel. : 23094054 Fax : 23093549

यद्वै वाङ् नाभविष्यन्न धर्मो नाधर्मो व्यज्ञापयिष्यत्।
न सत्यं नानृतं न साधु नासाधु न हृदयज्ञो नाहृदयज्ञो
वागेवैतत्सर्वं विज्ञापयति वाचमुपास्वेति।।

– छान्दोग्योपनिषत्–7–2–1

यदि वाणी का अस्तित्व न होता तो धर्म और अधर्म का, सत्य और असत्य का, अच्छे और बुरे का, प्रिय और अप्रिय का बोध नहीं हो पाता। वाणी से ही हमें इन सभी का ज्ञान होता है। अतः वाणी की उपासना करो।

– छान्दोग्योपनिषत्–7–2–1

विषय क्रम

1.	संकल्पना	अंशुली आर्या	9
2.	भारत का भाषायी परिदृश्य और अनुवाद का सेतु	विमलेश कान्ति वर्मा	14
3.	अनुवाद के आयाम : स्वरूप और परिदृश्य	रीतारानी पालीवाल	30
4.	अनुवाद और बहुभाषिकता	संतोष अलेक्स	40
5.	असमिया से हिंदी अनुवादः मेरे अनुभव	दिनकर कुमार	51
6.	अनुवाद के सेतु से मैंने अपनी मातृभाषा को राजभाषा से जोड़ा	सुजाता शिवेन	60
7.	ओड़िआ से हिंदी अनुवाद की चुनौतियाँ	राजेंद्र प्रसाद मिश्र	71
8.	उर्दू से हिंदी अनुवाद : मेरे अनुभव	जानकीप्रसाद शर्मा	80
9.	कन्नड़ अनुवाद की समस्याएं	धरणेंद्र कुरकुरी	88
10.	रचनात्मकता और अनुवाद की चुनौतियाँ	गौरीशंकर रैणा	95
11.	कोंकणी–हिंदी अनुवाद की समस्याएँ	आदित्य सिनाय भांगी	103
12.	काव्यानुवाद की चुनौतियाँ : हिंदी –गुजराती	मीनाक्षी जोशी	110
13.	वाल्मीकि–रामायण का अनुवाद : संस्कृति–महानद का अजस्र प्रवाह	विजय पंड्या	116
14.	अनुवाद की चुनौतियों को रेखांकित करता हिंदी डोगरी अनुवाद	सरोज बाला	119
15.	हिंदी से तमिल और तमिल से हिंदी अनुवाद की समस्याएँ	पी राजरत्नम	127
16.	तेलुगू–हिंदी और हिंदी–तेलुगु के साहित्यिक अनुवाद	एस शेषारत्नम्	131
17.	नेपाली–हिंदी अनुवाद : मेरे अनुभव	अमर बानियाँ 'लोहोरो'	141
18.	हिंदी और पंजाबी भाषाओं का दर्शन... परस्पर अनुवाद के फलक पर	इन्दु गुप्ता	148

19.	साहित्यिक अनुवाद : सिद्धांत और व्यवहार	सुभाष नीरव	160
20.	गीतांजलि' के हिंदी अनुवाद संबंधी समस्याएँ	देवेंद्र कुमार देवेश	165
21.	अनुवाद में मुश्किलें तो आती हैं पर...	निशान्त	178
22.	बोडो अनुवाद साहित्य	इंदिरा बोरो	184
23.	मेरा अनुवाद साहित्य का सफर	सोइबम इंद्रकुमार	190
24.	मराठी ग्रामीण उपन्यास का हिंदी अनुवाद : समस्याएँ और समाधान	गजानन चव्हाण	196
25.	अनुवाद : पुनर्सृजन का संघर्ष	ए. अरविंदाक्षन	205
26.	अनुवाद मेरी साधना	पी.के.राधामणि	209
27.	मैथिली में अनुवाद की क्रिया	देव शंकर नवीन	221
28.	भाषाई अस्मिता और मैथिली अनुवाद : एक अनुभवात्मक दृष्टिकोण	शुभंकर मिश्र	230
29.	हिंदी से संथाली में अनुवाद का आयाम	नाजीर हेम्बरम	237
30.	हिंदी–सिंधी अनुवाद संवाद अनुभव	मोहन हिमथाणी	245
31.	हिंदी साहित्य से संस्कृत में अनुवाद	राधावल्लभ त्रिपाठी	252
32.	अनुवाद और आस्थाः हिंदी धार्मिक ग्रंथों के अंग्रेज़ी अनुवाद की चुनौतियाँ	सुनन्दा वर्मा	257
33.	शब्द और अनुवाद	इकबाल अहमद	266
34.	मैं और मेरा अनुवाद कार्य	जगदीश राय कुलरियाँ	273
35.	क्रिप्टाएनालिसिस से कंठस्थ बहुभाषी (मशीनी अनुवाद के विविध आयाम)	भावना सक्सैना	278
36.	अननुवाद्यता	रश्मि जोशी	285
37.	लेखक परिचय		292